जन्मदिवस (25 दिसम्बर) के अवसर पर

नौजवानों के बारे में कुछ विचार

माओ त्से-तुङ

(चीनी क्रान्ति के महान नेता)

यह दुनिया तुम्हारी है, यह हमारी भी है, लेकिन अन्ततोगत्वा यह तुम्हारी ही होगी। तुम नौजवान लोग ओजस्विता और जीवन-शक्ति से भरपूर, सुबह 8 या 9 बजे के सूरज की तरह अपनी जिन्दगी की पुरबहार मंजिल में हो। हमारी आशाएं तुम पर लगी हुई हैं।...

यह दुनिया तुम्हारे ही हाथों में है। चीन का भविष्य तुम्हारे ही हाथों में है।

मास्को में चीनी विद्यार्थियों और प्रशिक्षार्थियों के साथ मुलाकात के दौरान बातचीत (17 नवम्बर 1957)

नौजवान लोग समाज की सबसे अधिक सक्रिय और सबसे अधिक प्राणवान शक्ति होते हैं। उनमें सीखने की सबसे तीव्र इच्छा होती है तथा उनके विचारों में रूढ़िवाद का प्रभाव सबसे कम होता है। समाजवाद के युग में यह बात खास तौर पर लागू होती है। हमें उम्मीद है कि विभिन्न जगहों के स्थानीय पार्टी-संगठन नौजवान संघ के संगठनों को सहायता देते हुए एक साथ मिलकर इस बात पर विचार करने की ओर ध्यान देंगे कि हमारे नौजवानों की शक्ति का पूर्ण रूप से कैसे विकास किया जाए। पार्टी-संगठनों को चाहिए कि वे नौजवानों के प्रति बाकी सब लोगों की ही तरह का बरताव न करें और उनकी विशेषताओं को नजरअन्दाज न करें। इसमें सदेह नहीं कि नौजवानों को भी बुजुर्गों और अन्य बालिग व्यक्तियों से सीखना चाहिए तथा तरह-तरह की उपयोगी गतिविधियों के लिए उनकी सहमति प्राप्त करने की यथाशक्ति कोशिश करनी चाहिए।

''चुङशान काउन्टी के शिनफ़िङ श्याङ की नं. 9 कृषि-उत्पादक सहकारी समिति का एक नौजवान अग्रिम दस्ता'' की परिचयात्मक टिप्पणी (1955)

कोई नौजवान क्रान्तिकारी है अथवा नहीं, यह जानने की कसौटी क्या है? उसे कैसे पहचाना जाय ? इसकी कसौटी केवल एक है, यानी यह देखना चाहिए कि वह व्यापक मजदूर-किसान जनता के साथ एकरूप हो जाना चाहता है अथवा नहीं, तथा इस बात पर अमल करता है अथवा नहीं? क्रान्तिकारी वह है जो मजदूरों व किसानों के साथ एकरूप हो जाना चाहता हो, और अपने अमल में मजदूरों व किसानों के साथ एकरूप हो जाता हो, वरना वह क्रान्तिकारी नहीं है या प्रतिक्रान्तिकारी है। अगर कोई आज मजदूर-किसानों के जन-समुदाय के साथ एकरूप हो जाता है, तो आज वह क्रान्तिकारी है; लेकिन अगर कल वह ऐसा नहीं करता या इसके उल्टे आम जनता का उत्पीड़न करने लगता है, तो वह क्रान्तिकारी नहीं रह जाता अथवा प्रति क्रान्तिकारी बन जाता है।

''नौजवान आन्दोलन की दिशा'' (4 मई 1939)

बुद्धिजीवी लोग जब तक तन-मन से क्रान्तिकारी जन-संघर्षों में नहीं कूद पड़ते, अथवा आम जनता के हितों की सेवा करने और उसके साथ एकरूप हो जाने का पक्का इरादा नहीं कर लेते, तब तक उनमें अक्सर मनोगतवाद और व्यक्तिवाद की प्रवृत्तियां बनी रहती हैं, उनके विचार अव्यावहारिक होते हैं और उनकी कार्रवाइयों में दृढ़ निश्चय की कमी बनी रहती है। इसलिए हालांकि चीन में क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों का जन-समुदाय एक हिरावल दस्ते की भूमिका अथवा एक सेतु की भूमिका अदा कर सकता है, फिर भी यह नहीं हो सकता कि उनमें से सभी लोग अन्त तक क्रान्तिकारी बने रहेंगे। कुछ लोग बड़ी नाजुक घड़ी में क्रान्तिकारी पांतों को छोड़ जाएंगे और निष्क्रिय बन जाएंगे, यहां तक कि उनमें से कुछ लोग क्रान्ति के दुश्मन भी बन जाएंगे। बुद्धिजीवी लोग केवल दीर्घकालीन जन-संघर्षों के दौरान ही अपनी कमियों को दूर कर सकते हैं।

''चीनी क्रान्ति और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी'' (दिसम्बर 1939),

जिन लोगों को काम का अनुभव है, उन्हें सिद्धान्त का अध्ययन करना चाहिए और गम्भीरता से पढ़ना चाहिए; सिर्फ तभी वे लोग अपने अनुभव को व्यवस्थित और समन्वित कर सकेंगे तथा उसे सिद्धान्त के स्तर तक ऊंचा उठा पाएंगे, सिर्फ तभी वे लोग अपने आंशिक अनुभव को सर्वव्यापी सच्चाई समझने के भ्रम में नहीं पड़ेंगे तथा अनुभववादी गलती से बच सकेंगे।

''पार्टी की कार्यशैली में सुधार करो'', (1 फरवरी 1942)

ज्ञान एक वैज्ञानिक वस्तु है और इस मामले में जरा भी बेईमानी या घमण्ड की इजाजत नहीं दी जा सकती। इससे बिलकुल उल्टा रुखख़्रईमानदारी और नम्रताख़्रनिश्चित रूप से आवश्यक है।

''व्यवहार के बारे में'' (जुलाई 1937), संकलित रचनाएं